



Original Article

21 वीं सदी के गीतांजलि श्री के कथासाहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ

डॉ. कुंदा मुकुंदराव निंबालकर

सहायक प्राध्यापक

सौ. मंगलताई रामचंद्र जगताप महाविद्यालय, उंब्रज

Manuscript ID:

IJAAR-C130339

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 194 - 198

Submitted: 29 Jan. 2026

Revised: 05 Feb. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. कुंदा मुकुंदराव निंबालकर

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785990

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785990>



Creative Commons



प्रस्तावना:

गीतांजलि श्री समकालीन हिंदी साहित्य की प्रमुख कथाकार हैं, जिनका लेखन स्त्री-संवेदना, पारिवारिक संरचनाओं की जटिलताओं और सामाजिक परिवर्तनों को गहनता से चित्रित करता है। उनकी रचनाएँ पारंपरिक संयुक्त परिवार की टूटती दीवारों, स्त्री-पुरुष संबंधों की असमानता, पीढ़ीगत संघर्षों और बाहरी हिंसा/ऐतिहासिक आघातों के परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव को उजागर करती हैं। तिरोहित (2001), खाली जगह (2006) और रेत समाधि (2018)। इनमें पारिवारिक समस्याएँ केंद्र में हैं। असंतोषपूर्ण विवाह, मातृ-पुत्र संबंधों की जटिलता, विधवा की स्वतंत्रता की खोज, दत्तक संतान की पहचान संकट, और संयुक्त परिवार की विघटनशीलता।

यह उपन्यास मध्यवर्गीय भारतीय परिवार को आधुनिकता, शहरीकरण, आतंकवाद और विभाजन की स्मृति के संदर्भ में चित्रित करते हैं। तिरोहित में छत एक प्रतीकात्मक स्थान बनकर स्त्री-मैत्री और पारिवारिक दमन को चुनौती देती है। खाली जगह बम विस्फोट के बाद परिवार की शोक प्रक्रिया और दत्तक पुत्र के भावनात्मक बोझ को दिखाता है। रेत समाधि विधवा माँ की पुनर्जीवन यात्रा के माध्यम से पुत्र की नियंत्रणशीलता और पुत्री की स्वतंत्रता के बीच टकराव को उजागर करता है। यह विमर्श इन समस्याओं का विश्लेषण करता है, साथ ही फेमिनिस्ट दृष्टिकोण से परिवार को पितृसत्तात्मक संस्था के रूप में देखता है, जिसमें स्त्रियाँ विद्रोह और सामंजस्य दोनों करती हैं। उपन्यासों के मूल पाठ, उनके अंग्रेजी अनुवाद Tomb of Sand और आलोचनात्मक लेखों का उपयोग किया गया है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. कुंदा मुकुंदराव निंबालकर. (2026). 21 वीं सदी के गीतांजलि श्री के कथासाहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 194 - 198. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785990>

गीतांजलि श्री हिंदी साहित्य की प्रमुख कथाकार हैं, जिनकी 21वीं सदी की कहानियाँ (2001 के बाद प्रकाशित

संग्रहों जैसे मार्च, माँ और साकुरा (2008), प्रतिनिधि कहानियाँ (2015), यहाँ हाथी रहते थे (2022), वैराग्य (2022) आदि



से) आधुनिक भारतीय परिवार की जटिलताओं को गहन मनोवैज्ञानिक और प्रयोगात्मक शैली में उकेरती हैं। इस पत्र में उनकी प्रमुख कहानियों—‘इति’, ‘मार्च’, ‘माँ और साकुरा’, ‘प्राइवेट लाइफ़’, ‘चकरघिन्नी’, ‘चौक’ तथा यहाँ हाथी रहते थे संग्रह की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याओं का वर्णन किया गया है।

तिरोहित (2001):

तिरोहित (2013) गीतांजलि श्री का पहला 21वीं सदी का उपन्यास है। कथानक लार्बर्नम हाउस नामक संयुक्त आवासीय परिसर पर केंद्रित है, जहाँ सैकड़ों घर एक साझा छत साझा करते हैं। मुख्य पात्र चच्चो (पति की चाची) और ललना हैं। चच्चो अमीर मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री है, जिसका पति ओम बाबू शीतल और उपेक्षाकारी है। वह घरेलू जीवन में अकेली और दमित महसूस करती है। ललना निम्नवर्गीय, अनाथ स्त्री है, जिसे पति ने त्याग दिया है। चच्चो ललना को घर ले आती है, और दोनों की गहरी मैत्री छत पर विकसित होती है जहाँ वे गाना-बजाना, नाचना-कूदना, वेशभूषा बदलना आदि करती हैं। यह मैत्री मुहल्ले और परिवार में अफवाहें, ईर्ष्या और असहजता पैदा करती है।

पारिवारिक समस्याएँ यहाँ बहुआयामी हैं। प्रथम, असंतोषपूर्ण विवाह और पति की उपेक्षा, चच्चो का पति ओम बाबू यौनिक और भावनात्मक रूप से अनुपस्थित है, जो मध्यवर्गीय परिवारों में स्त्रियों की यौनिक इच्छाओं को दबाने वाली सामाजिक संरचना को दर्शाता है। चच्चो का अकेलापन संयुक्त परिवार की “साझा छत” के बावजूद व्यक्तिगत अलगाव को दिखाता है। द्वितीय, स्त्री-मैत्री पर पितृसत्तात्मक निगरानी: दोनों स्त्रियों की निकटता को मुहल्ला अनैतिक या समलैंगिक मानकर अफवाहें फैलाता है। यह परिवार की स्त्रियों को घरेलू

भूमिका में बाँधने वाली रूढ़ियों को चुनौती देती है। चच्चो का भतीजा बिटवा वयस्क होकर स्मृतियों से कथा कहता है, “जिसमें वह ललना के प्रति संदेह और चच्चो के प्रति मोह रखता है। यह पीढ़ीगत संघर्ष और पुरुष नजरिए से स्त्री संबंधों का विकृत चित्रण दर्शाता है।”¹

तृतीय, वर्ग और लिंग असमानता का परिवार पर प्रभाव: चच्चो को विवाहित होने के कारण कुछ स्वतंत्रता है, जबकि ललना अनाथ होने से समाज की नजर में अनुपयुक्त है। दोनों की मैत्री में सहानुभूति, प्रतिस्पर्धा और रिश्ते की जटिलता है यह परिवार की “पूर्ण” छवि को तोड़ता है। उपन्यास की कथा दो भागों में है बिटवा की स्मृति-आधारित और ललना की प्रत्यक्ष। यह अविश्वसनीय कथन परिवार की स्मृतियों को उजागर करता है।

खाली जगह (2011):

आतंकवाद और हिंसा के परिवार पर प्रभाव को चित्रित करता है। कथानक एक अनाम शहर के विश्वविद्यालय कैम्पस के कैफे में बम विस्फोट से शुरू होता है, जिसमें 19 लोग मारे जाते हैं। एक माँ अपने 18 वर्षीय पुत्र की राख से भरी शिनाख्त करती है और विस्फोट स्थल की “खाली जगह” में बच गए 3 वर्षीय बच्चे को गोद ले लेती है। पिता मृत पुत्र को याद रखने पर अड़ा रहता है, जबकि माँ दत्तक पुत्र में मृत पुत्र को “पुनर्जीवित” करने की कोशिश करती है। कथा दत्तक पुत्र के नजरिए से कही जाती है, जो 18 वर्ष का होने पर माँ की “कृतज्ञता” और पिता की शोक-आग्रह से जूझता है।

पारिवारिक समस्याएँ में प्रथम, संतान की अचानक मृत्यु और शोक की असमान प्रक्रिया माँ 15 वर्ष तक रो नहीं पाती, दत्तक संतान को प्रतिस्थापन मानती है। पिता बार-बार कहता है, “मैं भाग्यशाली हूँ कि इस दुनिया में मैं उसका पिता



बनकर आया।”² यह माता-पिता के बीच भावनात्मक खाई पैदा करता है। द्वितीय, दत्तक संतान की पहचान संकट: दत्तक पुत्र माँ की नजर में “मृत पुत्र का पुनरुत्थान” है, जिससे वह दबाव महसूस करता है। उपन्यास दिखाता है कि हिंसा परिवार की संरचना को कैसे तोड़ती है मध्यवर्गीय सुरक्षा का भ्रम टूट जाता है।

तृतीय, ट्रॉमा का दीर्घकालिक प्रभाव: परिवार रोजमर्रा की जिंदगी जीने की कोशिश करता है, लेकिन “खाली जगह” भावनात्मक और शाब्दिक बनी रहती है।

रेत समाधि (2018):

रेत समाधि अंग्रेजी: Tomb of Sand, अनुवाद डेजी रॉकवेल, 2022; अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार विजेता सबसे चर्चित है। 80 वर्षीय “माँ” अम्मा पति की मृत्यु के बाद गहरे अवसाद में चली जाती हैं। परिवार बड़ा बेटा “बड़े” (पारंपरिक, नियंत्रक), बेटी बेटी स्वतंत्र पत्रकार, बहू, और पोते। माँ बिस्तर से उठकर बेटी के घर जाती हैं, ट्रांसजेंडर दोस्त रोजी से दोस्ती करती हैं, और पाकिस्तान जाकर विभाजन की स्मृति और प्रेमी से मिलने का फैसला करती हैं।

पारिवारिक समस्याओं में प्रथम, विधवा की स्वतंत्रता, पारिवारिक अपेक्षाएँ बड़े माँ को शांत, जिम्मेदार रखना चाहते हैं, लेकिन माँ बच्चे जैसी होकर विद्रोह करती हैं, “यह वृद्ध स्त्री की एजेंसी को उजागर करता है। द्वितीय, पीढ़ीगत और लिंग-आधारित संघर्ष बड़े पितृसत्तात्मक घर का मालिक है, बेटी आधुनिक लेकिन परिवार से टकराती है।”³ माँ-बेटी का रोल रिवर्सल माँ बच्ची, बेटी माँ पारिवारिक भूमिकाओं की उलटफेर दिखाता है। तृतीय, विभाजन की स्मृति का परिवार पर बोझ, माँ का पाकिस्तान जाना परिवार के सीमा धार्मिक, भावनात्मक को

चुनौती देता है। रोजी हिजड़ा से मैत्री मध्यवर्गीय हिपोक्रेसी उजागर करती है।

गीतांजलि श्री का शिल्प प्रवाहपूर्ण कथा, प्रतीक छत, खाली जगह, रेत, और विखंडित कथन समस्याओं को गहराई देता है। 21वीं सदी के संदर्भ में ये उपन्यास वैश्वीकरण, आतंकवाद और स्त्रीवाद के युग में परिवार की पुनर्परिभाषा करते हैं। 21वीं सदी की कहानियाँ (2001) के बाद प्रकाशित संग्रहों जैसे मार्च, माँ और साकुरा (2008), प्रतिनिधि कहानियाँ (2015), यहाँ हाथी रहते थे (2022), वैराग्य (2022) आदि से) आधुनिक भारतीय परिवार की जटिलताओं को गहन मनोवैज्ञानिक और प्रयोगात्मक शैली में उकेरती हैं। इस पत्र में उनकी प्रमुख कहानियों—‘इति’, ‘मार्च, माँ और साकुरा’, ‘प्राइवेट लाइफ़’, ‘चकरघिन्नी’, ‘चौक’ तथा यहाँ हाथी रहते थे संग्रह की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याओं का वर्णन किया गया है।

गीतांजलि श्री की कहानियाँ नारीवादी सिद्धांत से परिवार को देखती हैं। जहाँ स्त्री माँ, बहन, बहू पारंपरिक भूमिकाओं से मुक्ति की कोशिश करती है किंतु आर्थिक-भावनात्मक निर्भरता में फँसी रहती है। विमर्श का आधार-परिवार का विघटन, वृद्धावस्था और मृत्यु, प्रवास और सांस्कृतिक टकराव, भाषा-शिल्प का योगदान।

1. इति, वैराग्य: यह कहानियाँ 21 वीं सदी के बिखरे मध्यमवर्गीय परिवार की माइक्रोस्कोपिक तस्वीर है। मुख्य पात्र: 85 वर्षीय पूर्व सरकारी अफसर पिता तानाशाह, मीठा खाने की लत, चिड़चिड़े, माँ सेवा करती हुई शिकायतें, बेटी नैरेटर, तरस और क्रोध का मिश्रण, बेटा पेंशन पर नियंत्रण रखने वाला, दामाद-बहुएँ दुश्मनी के कारण वर्षों से संपर्कहीन है।



पारिवारिक समस्याएँ:

संयुक्त परिवार का मिथक: परिवार “महान भारतीय संयुक्त परिवार” का दिखावा करता है किंतु “दुश्मनियों के रहते आना-जाना बंद”। ट्रैफिक लाइट पर या दुकान में सामना होने पर झुर्रियाँ पहचानने की नौबत। आर्थिक कलह पिता की पेंशन पर बेटे का एकाधिकार। माँ “बहाने से” पैसे लेती है। मौत के बाद “कौन कहेगा, किससे, कैसे” की झंझट राख विसर्जन, संपत्ति बंटवारा कपड़े, घड़ी, साड़ियाँ वृद्ध पिता की उपेक्षा और निर्भरता पिता घिसटते चलते हैं, नाखून कटवाते हैं, गर्म पानी माँगते हैं, नौकरानी से फ्लर्ट करते हैं। बेटी उन्हें गले लगाती है किंतु मक्कारी पहचानती है। रात में खट-खट दरवाजा बजाना, मीठा चुराना ये छोटी-छोटी आदतें पूरे परिवार को त्रस्त करती हैं।

मृत्यु की उलझन मौत सुथरी होती है। अस्पताल, सूट में लौटना, सम्मानजनक अंतिम संस्कार। माँ 13 दिन विधवा की सजा भुगतती है। कहानी अंत में “इति” शब्द से समाप्त होती है, जो मृत्यु को समापन बताता है किंतु परिवार की उलझनों को खुला छोड़ देता है।

2. ‘मार्च, माँ और साकुरा’ (2008):

नैरेटर बेटा, जापान में काम कर रहा है की 70 वर्षीय माँ जापान आती है। समस्याएँ प्रवासजनित दूरी माँ भारत में अकेली, बेटा विदेश में। माँ को बाहर निकलने का डर। साकुरा देखने की उत्सुकता किंतु अकेलापना। बेटा अब “माँ” बनता है, खाना खिलाना, घुमाना। माँ बच्ची जैसी डरती, उत्सुक स्त्री की स्वतंत्रता, परंपरा माँ को “घरेलू” भूमिका से बाहर निकलने का अवसर, किंतु स्वास्थ्य और भावनात्मक निर्भरता की बाधा। यह कहानी वैश्वीकरण के युग में माँ-बेटे संबंध की नई परतें खोलती है।

अन्य कहानियाँ यहाँ हाथी रहते थे, प्राइवेट लाइफ़, चकरघिन्नी, चौक।

यहाँ हाथी रहते थे (2022) युवा ऑफिस महिला और रहस्यमयी वृद्धा के बीच शहरी परिवार-रहित जीवन की समस्या। हाथी विलुप्त हो रही पारिवारिक स्मृतियाँ। प्राइवेट लाइफ़ परिवार में एकांत की कमी आधुनिक व्यक्तिवाद। चकरघिन्नी: परिवार चक्र में फँसी स्त्री की घर, बच्चे, संबंधों का चक्कर।

चौक: सार्वजनिक स्थान चौक और निजी परिवार का शहरी मध्यमवर्ग की तनावपूर्ण दिनचर्या।

परिवार का विघटन और आधुनिकता:

श्री की कहानियाँ दिखाती हैं कि 21वीं सदी में संयुक्त परिवार “टुकड़े-टुकड़े” हो गया है इति। आर्थिक स्वतंत्रता, नौकरी, शहर-प्रवास ने रिश्तों को “दुश्मनी” में बदल दिया। यह साहित्यिक रूप है जहाँ उत्पादन, पेंशन, संपत्ति संबंधों को तोड़ता है। विपरीत रूप में ‘मार्च माँ और साकुरा’ में प्रवास परिवार को फिर से जुड़ने का अवसर देता है किंतु पूर्णता नहीं। शोधकर्ता डॉ. गोपीराम शर्मा (2023) लिखते हैं कि 21वीं सदी की कहानियों में वृद्ध विमर्श परिवार की “नैतिक मूल्यों की जर्जरता” दर्शाता है

वृद्धावस्था, मृत्यु और भय:

इति में पिता की मृत्यु “रिहर्सल” जैसी है परिवार तैयार है किंतु भावनात्मक रूप से नहीं। माँ की 13-दिन की “सजा को उजागर करती है। श्री यहां कहती हैं—“स्त्री मृत्यु के बाद भी “सेवा” करती रहती है।”⁴

स्त्री-विमर्श और भूमिका:

श्री की कहानियों में माँ, बहन महत्वपूर्ण हैं। ‘मार्च, माँ और साकुरा’ में माँ को नई दुनिया मिलती है किंतु बेटा फिकर



नहीं करता है। गीतांजलि श्री कहती हैं की कथा साहित्य में “स्त्री को स्वातंत्र्य-चेतना से जोड़ता है किंतु परिवार की दीवारों बाधा बनती हैं।”⁵

तिरोहित में छत “अंदर-बाहर” की सीमा को धुंधला करती है। पारंपरिक परिवार स्त्रियों को घर तक सीमित रखता है, लेकिन छत स्वतंत्रता का स्थान बन जाती है। यह फेमिनिस्ट विमर्श में “तीसरा स्थान” का उदाहरण है, जहाँ स्त्रियाँ पितृसत्ता से मुक्ति पाती हैं। गीतांजलि श्री यौनिक इच्छा धुन को केंद्र में रखकर दिखाती हैं कि परिवार यौनिक दमन का स्रोत है। समीक्षक हरिश त्रिवेदी इसे इच्छा की पूर्ति की चुनौतियों का उपन्यास मानते हैं, जहाँ स्त्री-संबंध पितृसत्तात्मक परिवार को सबसे बड़ा खतरा लगता है।

आधुनिक भारत में आतंकवाद के व्यक्तिगत प्रभाव को दर्शाता है। परिवार पितृसत्तात्मक नहीं, बल्कि शोक-प्रबंधन में लिंग-आधारित भूमिकाओं से प्रभावित है। उपन्यास “रेत की समाधि” से जीवन की यात्रा तक ले जाता है। यह फेमिनिस्ट दृष्टि से दिखाता है कि परिवार स्त्रियों को समर्पित माँ बनाकर बाँधता है। विभाजन ट्रॉमा परिवार की पहचान को प्रभावित करता है। समीक्षाएँ इसे “सीमाओं के खिलाफ विद्रोह मानती हैं परिवार की सीमाएँ भी।

निष्कर्ष:

गीतांजलि श्री के 21वीं सदी के उपन्यास पारिवारिक समस्याओं को यथार्थवादी प्रयोगात्मक ढंग से चित्रित करते हैं। ये दिखाते हैं कि परिवार न तो पूर्ण है न स्थिर यह संघर्ष, विद्रोह

और पुनर्निर्माण का स्थान है। विमर्श सुझाता है कि आधुनिक भारत में परिवार की समस्याएँ व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक-राजनीतिक हैं।

गीतांजलि श्री की 21वीं सदी की कहानियाँ पारिवारिक समस्याओं को दर्पण की तरह प्रस्तुत करती हैं। ‘इति’ में मृत्यु परिवार को उजागर करती है, ‘मार्च माँ और साकुरा’ में दूरी को पाटने की कोशिश, यहाँ हाथी रहते थे में नई सामूहिकता की तलाश। इस विमर्श से स्पष्ट है कि ये समस्याएँ व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक हैं। जिनका समाधान सहानुभूतिपूर्वक लैंगिक समानता और आर्थिक नियोजन में है। श्री का लेखन हमें याद दिलाता है कि परिवार “इति” नहीं, निरंतर प्रक्रिया है। भविष्य की कहानियाँ शायद कृत्रिम बुद्धिमत्ता की गतिशीलता पर आधारित होंगी।

संदर्भ सूची:

1. श्री, गीतांजलि. तिरोहित. राजकमल प्रकाशन, 2001.
2. श्री, गीतांजलि. खाली जगह. राजकमल प्रकाशन, 2006.
3. श्री, गीतांजलि. रेत समाधि. राजकमल प्रकाशन, 2018.
4. गीतांजलि श्री। ‘इति’। हिंदवी। <https://www.hindwi.org/story/iti-geetanjali-shree-story>
5. गीतांजलि श्री। मार्च, माँ और साकुरा। हरपर हिन्दी, 2008।